International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-02-2019; Accepted: 17-03-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 14-16

भोजपुरी एवं कामरूपिया बोलियों के लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन: असम के विशेष संदर्भ में

मिजानुर हुसैन मण्डल
तदर्थ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, दरंग कॉलेज, तेज़पुर, असम, भारत।

प्रस्तावना

पूर्वोत्तर भारत में अवस्थित असम एक ऐसा राज्य है जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य का अपार भंडार है। इस राज्य के उत्तर में अरुणाचल प्रदेश, पूर्व में नागालैंड तथा मणिपुर, दक्षिण में मिज़ोरम, मेघालय एवं पश्चिम में बांग्लादेश तथा पश्चिम बंगाल स्थित है। असम एक बहुभाषी प्रदेश है। ग्वालपड़िया, कामरुपिया, बोडो, गारो, मिसिंग, कार्बी, बागानी, भोजपुरी, सिलेटी आदि भाषाएँ इस वैविध्य के उदाहरण हैं। यहाँ अनेक जाति-जनजाति के लोग एक साथ घुल-मिल कर रहते हैं। असम के विभिन्न भागो में रहने वाले लोग अनेक बातों में अलग-अलग होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से कुछ साम्यताएँ भी रखते हैं जो निःसंदेह विशेष अध्ययन की माँग करता है।

इस विषय के अंतर्गत अध्ययन के लिए मैंने जिन बोलियों का चुनाव किया है उनमें से कामरूपिया बोली का प्रयोग मुख्यतः असम के मध्य असम क्षेत्र में होता है और इसका प्रसार कामरूप के अतिरिक्त असम के पूर्वी बारपेटा, रंगिया आदि क्षेत्र में बोली जाती है। इस क्षेत्र में प्रचलित लोकगीत कामरुपिया लोकगीत कहलाते हैं। इसके अलावा असम के विभिन्न प्रदेशों में कई दशकों पहले बिहार और उत्तर-प्रदेश के भोजपुरी इलाकों से बहुत सारे लोग आकर बस गए थे। न सिर्फ ब्रह्मपुत्र घाटी में बल्कि बराक घाटी में भी इनकी अच्छी खासी संख्या है। इन भोजपुरी भाषी लोगों ने अपने लोकगीतों और अन्य सांस्कृतिक संस्कारों को न सिर्फ निरंतर जीवित रखा है बल्कि उसे क्रमशः और भी समृद्ध किया है।

असम में प्रचलित इन विभिन्न बोलियों के लोकगीतों को अगर हम देखें तो इनमें विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं की गहरी अभिव्यक्ति मिलती है। संस्कार, उत्सव, प्रकृति, प्रेम, श्रम आदि से सिंचित संवेदनाएँ इन बोलियों के लोकगीतों में झंकृत हुई हैं। सामान्यतः भोजपुर क्षेत्र में बोली जाने वाली गीतों को भोजपुरी लोकगीत कहलाते हैं। परंतु असम में जो भोजपुरी लोकगीत प्रचलित है इसका क्षेत्र वैविध्य हैं। यह गीत असम के विभिन्न शहर एवं गाँव में प्रचलित है। इन लोकगीतों का प्रचालन मुख्यतः बराक बेल्ली तथा चाय-जनगोष्ठी समाज में प्रचलित है। भोजपुरी समाज में जो संस्कार परक गीत मिलते हैं वे इस प्रकार हैं-पुत्र–जन्म, मुंडन, जनेऊ, विवाह, और मृत्यु आदि। पुत्र जन्म के अवसर पर जो गीत गये जाते हैं उसे सोहर कहा जाता है। भोजपुरी बोली में 'सोहर' का अर्थ है 'अच्छा लगना'। जो संस्कृत के 'शोभन' शब्द से मिलता जुलता है। एक सोहर गीत में माता अपने पुत्र को देश सेवक बनाने की इच्छा व्यक्त करती है। कहते हैं पुत्र के लिए मैंने बड़े-बड़े यत्न, उपाय,तथा उपचार किये, परंतु जब राम की कृपा हुई तभी पुत्र पैदा हुआ। मैं अपने पुत्र को भारत माता की सेवा में लगाऊँगी। यह देश का काम करेगा, जिससे इसका जन्म सफल हो जायेगा। माता कहती है कि मेरे मन में यही अभिलाषा है, यही इच्छा है कि मेरा लड़का देश की सेवा करने वाला बने। ईश्वर(राम) से मेरी यही प्रार्थना है-

बड़-बड़ भईले जतनवा; उपइया, उपचरवा नु हो।
ललना जब रे किरिपा भईले राम के; गोदिया बालक खेले हो॥
पुतवा के देबो भारत मईया के सेउवा में; मातवा के सेउवा में हो।
ललना, पूत करिहें देसवा के काम; त जनम सुफल होइहे हो॥
मनवा में इहे अभिलाख; इहे एक साध, इहे एक सधिया नु हो।
ललना पूत मोर होवे देस सेवक; राम से बिनति करो हो॥ (लक्षी कुमार, अमराघाट, गंगानगर, सिलचर 2019)

इसी प्रकार भोजपुरी लोकगीतों की तरह कामरूपिया लोकगीतों में भी पुत्र-जन्म के गीत मिलते हैं। जहाँ भोजपुरी लोकगीत में राम-जन्म का कथन मिलता है वहाँ कामरूपिया लोकगीतों में कृष्ण-जन्म का कथन पाया जाता है। नीचे के गीत में एक स्त्री दूसरी स्त्री से कहती है कि हे सखी ! कृष्ण के जन्म का खबर किसी को नहीं मिला। न उन्हें पानी से नहा पायी और न ही उनको देख पायी। वे काला हे या सफ़ेद है, और तो और उनको गोद में भी नहीं ले पायी। हे मेरे प्राण प्रिय कृष्ण ! तुम हो श्याम सुंदर। तुम्हारे लिए इस अभागिनी स्त्री का हृदय जल रही है।

कृष्ण उपजिला केवे नाजनिला उ
धुवाब नापालु पानी।
कला ने बगा देखाओ नापालु
कोलाते नललु आनी॥
कि ओ मोर बछा प्राण धन तई
कलिया सुंदर।
तोक लागि अभागिनीर दहीछे अन्तर॥ (असमिया लोकगीत संग्रह, स. पंकज चौधरी, पृ-9)

अतः संवेदनाओं में साम्य होते हुए भी संस्कृतकि कारणों से कुछ विभेद आ गया है।

सोलह संस्कारों में से विवाह संस्कार सबसे महत्वपूर्ण रूप में माना जाता है। यह संस्कार सबसे प्रसिद्ध और प्रधान है। क्योंकि इस संस्कार के पश्चात व्यक्ति पहली बार गृहस्थी जीवन में दाखिल होता है और यही कारण है कि इस संस्कार का विधान संसार के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। धार्मिक दृष्टि से भी देखा जाए तो अविवाहित व्यक्ति यज्ञ आदि विधान नहीं कर सकता। अतः भारतीय समाज में विवाह हमारे धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। कहा जाता है कि 'बिनु घरनी घर भूत का डेरा" अर्थात बिना गृहणी के घर में भूतों का वास होता है। विवाह केवल वासना पूर्ति का माध्यम नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य मानव धर्म का उचित रीति से पालन करना है। अक्सर पुत्री कि शादी के लिए पिता परेशान रहते हैं। एक भोजपुरी लोकगीत में पुत्री को अविवाहित देखकर पिता की घोर चिंता तथा उसके विवाह के पश्चात सुख की नींद सोने का चित्रण मिलता है।

आवरे बजनिआभइया बजवा बजावहु; सहनाइ सबद सुनाबहु ए।
बराहमन बरूआ गोतर उचरहु; करबि हम थिया के बिआहए॥
कलसा के ओट भइल बोलेले कवन दुलहा; मेहरि से अरज हमार ए।
जग विधनस जनि कर मोर मेहरि; खेइबि हम नइआ टोहर ए॥
कथि के तोर नाव नवैया; कथि के लागल करूआर ए।
कवन दुलहा चली के नाव खेवइया; कवन सुन्नरी उतरेली पार ए॥
सोनन के मोरा नाव नवइया; रूपहि लागल करूआर ए।
दुलहा जे हामरो भइले खेवइआ; सुन्नरी उतरेली पार ए॥

बाबा के पिछुवरवा घनि बसबरिआ; बहि गइले सीतल बयारि ए।
ताहि तर बाबा हो पलंगवा डसावेले; तब उ सुतेले निरभेद ए॥ (लक्षी कुमार, अमराघाट, गंगानगर, सिलचर 2019)

इसी प्रकार कामरूपिया लोकगीतों में भी विवाह से संबंधित गीत पाये जाते हैं। इन गीतों में वर खोजने से लेकार वरात की विदाई तक का वर्णन मिलता है। एक कामरूपिया लोकगीत में लड़का लड़की को देखने घर चला जाता है। जब लड़की अपनी घूँघट उतारकर लड़का को देखती है तब लड़का को पछन्द नहीं आता है। इसके पश्चात एक स्त्री दूसरी स्त्री को कहती है कि लड़का का पेट इतना बड़ा है मानो हाड़ी(भात बनाने का बड़ा बर्तन) के समान है जिसको देखते उल्टी आने लगी, उसका दाँत मूली की तरह है और उसकी आँख लता के बीज की तरह है। नीचे के गीत में इसका उदाहरण द्रष्टव्य है –

बर बरिया जाय मेनका संगे दूनी घट।
माथार कापोर गोचाई चाइला जोवाइ उपस्थित हे॥
प्रथमते जोवाइ बूली अ बर बरिबाक गइला।
हाड़िहेन पेट देखी उल्टी आहिल हे।
हाड़िहेन पेट तेउर ओ मुला हेन दाँत।
चकु दुटा लतार गूटी तटा टिंगार जात हे॥

असम विभिन्न संस्कृतियों का राज्य रहा है और इन संस्कृतियों के सौंदर्य का यह वैविध्य ही असमिया संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला होती है। वही पर रहन-सहन, खान-पान,वेश-भूषा, आचार-व्यवहार आदि सीखता है। समाज के इन आचार-व्यवहार, खान-पान, रहन-सहन आदि केंद्र में रखकर व्यक्तिगत और सामूहिक आनंद के लिए सभी देशों में कुछ अनुष्ठान एवं उत्सवों का पालन किया जाता है। ठीक वैसे ही असम में भी कुछ अनुष्ठान एवं उत्सवों का पालन होता है। होली फाल्गुन की पुर्णिमा में होने वाला हिंदुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार है। होली में जो गीत गयी जाती है उसे होली गीत के नाम से जाना जाता है। 'होली' को क्षेत्र भेदे 'फगुआ' या 'फाग' भी कहते हैं। यह उत्सव का पालन फाल्गुन महीने में मनाया जाता है। इसी महीने में गाये जाने के कारण इसे 'फाल्गुन' या 'फागु' गीत कहते है। जिस दिन होली उत्सव का पालन होता है उसके एक दिन पूर्व 'होलिका' जलाई जाती है, जिसे भोजपुरी समाज में 'संवत जलाना' कहते हैं। होली एक ऐसा त्योहार है जिसमें परिवार के सभी लोग एकसाथ मिलकर होली खेलते हैं। भोजपुरी के एक होली गीत में पति के परदेश चले जाने पर स्त्री का होली न खेलने का वर्णन मिलता है। नीचे का गीत उदाहरण के लिए दृष्टव्य हैं-

बन बोलेला मोर हरि हो; का संगे होरी खेलो री।
आम के डाढ़ी कोइलिया; बन बोलेला मोर।
का संगे होरी खेलो री; एक राधे दूजे नन्द किसोर॥ का संगे होरी।
आवन आवन सइयाँ कहि गइले; अरुझेले कवनी ओर।
का संगे होरी खेलो री; एक राधे दूजे नन्द किसोर॥ का संगे होरी।
बन बोलेला मोर हरि हो; का संगे होरी खेलो री॥ (मदन कुमार, अमराघाट, गंगानगर, सिलचर 2019)

अन्य प्रदेशों की तरह ही होली असमिया समाज का भी एक प्रसिद्ध त्योहार है। यह सार्वजनिक त्योहार है, जिसे सभी मानाते हैं। असम के प्रत्येक क्षेत्र में इस उत्सव का पालन किया जाता है। होली को असमिया भाषा में फाकुआ भी कहते हैं। इन गीतों में राम-लक्ष्मण-सीता का वर्णन मिलता है। एक कामरूपिया लोकगीत में इसका उदाहरण द्रष्टव्य है-

आजी आमी होली खेलिम दिने राति।
चैत फागुनर माशे, राम गेलो वनवासे,
महिरावन हरी नीला पाताले॥(डॉ ध्रुवज्योति नाथ, रामकथा आश्रयी असमिया साहित्य, पृ- 23)

(आज हम दिन-रात होली खेलेंगे। फाल्गुन-चैत महीने में राम गए वनबास और महिरावण (रावण का मित्र) कब्जा कर पाताल लेकर गया।)
असम में पूजा की परंपरा प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। पूजा मानव जीवन का अभिन्न अंग है। पूजा से ही व्यक्ति अपने मन को शुद्ध महसूस करता है। कुछ लोग देवी-देवता के भय से और कुछ लोग आत्मशुद्धि के लिए पूजा करते हैं। आजकल की नयी शिक्षा ने पुरानी मान्यताओं में बहुत बड़ा परिवर्तन लाया है। लेकिन समाज में आज भी पूजा की परंपरा प्रचलित है। आज भी विभिन्न देवी देवताओं की पूजा होती है। भोजपुरी प्रदेश की तरह असम में भी पूजा संबंधित गीत पाये जाते हैं। भोजपुरी पूजा गीतों में शीतला माता का भी वर्णन पाया जाता है। भोजपुरी में शीतला माता 'चेचक रोग' की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। शीतला माता का निवास स्थान नीम का पेड़ समझा जाता है। अतः वह नीम की टहनी से रोगी को झाड़ती है। इस रोग के कुछ नियम भी है जैसे-बालों को न काटना, रोटी का न खाना, दाल में हल्दी न डालना, साग-भांजी को न छौंकना, जूता न पहनना और किसी को प्रणाम न करना आदि। शीतला माता बड़ी दयालु होती है। वह नीम के पेड़ में हिंडोल लगा कर झूल रही हैं। इतने में ही उन्हे प्यास लगती है। माली इनका भक्त है। अतः जब उसे प्यास लगती है तब उससे पानी माँगती हैं। पानी पिलाने पर वह मालिन को आशीर्वाद देती है। वह इतनी दयालु हैं कि भक्त की प्रार्थना को अस्वीकार नही कर सकती, एक भोजपुरी गीत देखिए-

निमिया की डाढ़ी मइया लावेली हिलोरवा कि झुलि झुली न मइया गावेली गीत॥
झुलत झुलत मइया का लगली पियसिया, कि चली भइली मलहोरिया आबास॥
सुतलु बाड़ कि जागलि ए मालिनी, उठि के मोहि के पानीय पियाउ॥(लक्षी कुमार, अमराघाट, गंगानगर, सिलचर 2019)

इसी प्रकार कामरूपिया लोकगीतों में भी शीतला पुजा का गीत मिलता है। शीतला को कामरूपिया बोली में 'आईनाम' कहते हैं। शीतला देवी को बसंत रोग की देवी कहती है। शारीरिक अस्वास्थ्य को दूर करने के लिए शीतला देवी की पुजा की जाती है। अतीत में इस रोग की कोई दवाई नहीं थी। इसलिए पुजा के माध्यम से इस रोग को दूर करने की कामना करती है। यह अनुष्ठान असम के जनप्रिय अनुष्ठानों में से एक है। बसंत रोग होने पर मरीज को तीन दिन तक पता नही चलता है। चौथा दिन मरीज को बसंत रोग का पता चलता है क्योंकि उस दिन बुखार की आती है। लोकविश्वास के अनुसार बुखार आने के तीन दिन बात बसंत रोग को दिखाई पड़ती है। इसका वर्णन निम्नलिखित गीत में द्रष्टव्य है-

एक दिन दुई दिन तिनी दिन हइलों।
चिना अई चति अई आई कोनजना॥
एक दिन दुई दिन तिनी दिन हइलों।
चारि दिनर मुरत आई ज्वरत फेलाला॥
पाँच दिन छय दिन सात दिन हइलों।
आठ दिनर मुरे आई गृहे देखा दिलो॥ (भानुमति कोच, उत्तर गुवाहाटी)

(पहला दिन, दूसरा दिन, तीसरा दिन हो गया पर अभी तक पहचान में नहीं आया बसंत कौन सा है। पहला दिन, दूसरा दिन, तीसरा दिन हो गया और चौथा दिन में बुखार आ गया। पाँचवा दिन, छठा दिन, सातवा दिन हो गया और आठवाँ दिन के बाद (आई) बसंत घर पर दिखाई दिया।)
अतः संवेदनाओं में साम्य होते हुये भी सांस्कृतिक कारणों से कुछ विभेद आ गया है।

इसके अलावा गंगा पूजा, छठ पूजा, लक्ष्मी पुजा, शिव पूजा का भी वर्णन भोजपुरी पूजा गीतों में पाया जाता है। इसी प्रकार कामरूपिया लोकगीतों में भी शिव पुजा, लक्ष्मी पुजा, दुर्गा पुजा आदि का चित्रण मिलता है।

इसी प्रकार इन दोनों लोकगीतों में प्रेम का चित्रण भी पाया गया है। यौवन से प्रेम का अटूट संबंध है। इसलिए प्रेम इश्क मजाज़ी से इश्क हक़ीक़ी की ओर चलता है। इन गीतों में मिलन, विच्छेद, विरह आदि का चित्रण पाया जाता है। भोजपुरी प्रेम परक गीतों में चैता, झूमर, पूर्वी आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। चैत्र के महीने में गाये जाने वाले गीतों को चैता गीत कहा जाता है। चैता को भोजपुरी समाज में 'घांटो' भी कहते है। इन गीतों में संयोग श्रृंगार के साथ-साथ वियोग श्रृंगार का चित्रण भी पाया जाता है। फागुन महीने की सारी मादकता जैसे घनीभूत होकर चैता में सिमट जाती है। यही कारण है कि चैता के गीत अधिक मधुर सुगम व सहज होते हैं। एक भोजपुरी चैता गीत में पत्नी के सोते हुए पति का पत्नी के कुवचन सुनकर जोगी बन घर छोडकर निकल पड़ता है। पत्नी द्वारा पति का खोज करते हुए पत्नी अपने सखी से कहती है –

आहों रामा सूतल रहली पिया संगे सेजिया हो रामा।
बाते-बाते लागि गइले पियवा से रेरिय हो रामा॥
बाते बाते।
आहों रामा मुंहवा से निकलेला बोलिया कुबोलिया हो रामा।
ताहि बोलिये; पियवा भइले बयरगिया हो रामा॥
ताहि बोलिये।
आहों रामा बाट चलत बटोहिया भइया हितवा हो रामा।
एहि बाटे; देखूअ भइया बयरगिया हो रामा॥
एहि बाटे। (मदन कुमार, अमराघाट, गंगानगर, सिलचर 2019)

इसी प्रकार कामरूपिया लोकगीतों में भी प्रेम से संबंधी गीतों का वर्णन मिलता है। कामरूपिया प्रेम गीतों में कृष्ण का कथन अधिक मिलते हैं। इन गीतों में कहीं संयोग शृंगार का वर्णन मिलता है तो कही वियोग शृंगार। कृष्ण की बाँसुरी का आवाज सुनने पर स्त्रियाँ उत्तेजित हो जाती है। कहते है हे ! कृष्ण तुम मध्य रात्री बंशी बजाकर मुझे क्यों बोला रहे हो। तुम्हारी बाँसुरी के कारण मेरी आँख में नींद नहीं है और पेट में भी भात नहीं है। सासुरी रसोई घर में और ननंद मेरे साथ में है। तुम्हारे पास जाने से वे बोल देगी। हे कृष्ण तुमसे बिनती करती हूँ तुम बाँसुरी मत बजाओं तुम बाँसुरी की आवाज़ मत सुनाओ। गीत इस प्रकार है-

चाकुत नाई निद्रा कानु पेटे नाई भात।
माज राति बांही बजाई मातीला आमाक॥
शाहुई आछे रांधन घरे ननद आछे काषे।
तोमर काषे गैले कानु कोई दिब पाछे॥
नबजाबा बांही प्रभु नुतुलिबा सुर।
कातरे करीछों स्तुति करि हाथ ज़ोर॥

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भोजपुरी एवं कामरूपिया दोनों ही भाषाओं के लोकगीतों में अत्यधिक साम्यता है। जो कुछ अंतराल दिखाई देता है वह भी वाह्य ही है। दोनों ही गीत लोक-जीवन से अत्यंत घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए है। लोकगीत एक ऐसा गीत है जिसमें जन-समूह के हृदय का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन दोनों गीतों में कही प्रेम, कही विरह, कही उत्साह तो कही हर्ष उल्लास का चित्रण देखने को मिलते हैं। दोनों ही क्षेत्र के लोकगीत अपने समाज और समय की सुंदर अभिव्यक्ति करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि दोनों ही लोकगीतों की संवेदना की भावभूमि एक ही है।

संदर्भ

1. शर्मा धीरेन, असमिया लोक संस्कृतिर आभास, बानी प्रकाशन, गुवाहाटी सं २०११ ई
2. दस नारायण, असमिया संस्कृतिर कनिका, परमानन्द चंद्र प्रकाशन, गुवाहाटी सं १९९८ई
3. देवजित बरा, उत्तर-पूर्वाञ्चलर जनगोष्टिय लोक-संस्कृति, एम,आर पब्लिकेशन, पनबाजार,गुवाहाटी वर्ष-2014
4. मलिना देवी राभा, असमर जनजाति आरू संस्कृति, असम साहित्य सभा, चन्द्रकान्त संदिके भवन, वर्ष-2011
5. प्रहलाद कुमार बरुआ, असमिया लोकसाहित्यअसम साहित्य सभा षष्टम अधिवेशन, डिब्रुगड़, वर्ष-2001
6. शांति जैन, लोकगीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, वर्ष-1999
7. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोकगीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, वर्ष-1996
8. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय काशी, वर्ष-1996
9. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष-2008 इ०
10. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रदेश के लोकगीत, लोक संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी वर्ष-1990